|| ॐ अरिष्टनेमी नाथाय नमः || || श्री महावीराय नमः || || ॐ पार्श्वनाथाय नमः ||

|| ॐ सिमंधर स्वामी नमः || || ॐ गौतमस्वामी नमः ||

महामंगलकारी अनुष्ठान

जय गुरु जैन दिवाकर

जय गुरुणी कमला

महासती
श्री डॉ. कुमुदलताजी म.सा.

महासती
श्री डॉ. महाप्रज्ञा जी म.सा.

महासती
श्री डॉ. पद्मकीर्ती जी म.सा.

महासती
श्री राजकिर्ती जी म. सा.

आदि ठाणा ४.

भेटकर्ता: रोशनलाल-कंवरबाई, महावीर-मैना, विमल-प्रियंका
आदिता, दक्षिता, झिल, लव्यम एवं डांगी परिवार
कल्याण, ठाणे, रायपूर, मो.: 7021255052 / 8691018035

www.kumudwani.com

श्री पैंसठिया छंद

श्री 'नेमीश्वर' 'संभव' स्वामी,
'सुविधि' - 'धर्म' 'शान्ति' अभिराम ।
अनंत सुव्रत नमिनाथसुजाण,
श्री जिनवर मुझ करो कल्याण ।। १ ।।
'अजितनाथ' - 'चन्दा प्रभु' धीर,
'आदिश्वर' - 'सुपार्श्व' गम्भीर ।
'विमलनाथ' विमल जग जाण, श्री जिन ।। २ ।।
'मल्लिनाथ' जिन मंगल रूप,
पच्चीस धनुष सुन्दर स्वरूप ।
श्री 'अरनाथ' नमू 'वर्धमान', श्री जिन ..।। ३ ।।
'सुमति' - 'पद्मप्रभु' अवतंस,
'वासुपूज्य' - 'शीतल' 'श्रेयांस' ।
'कुंथु' - 'पार्श्व' - 'अभिनंदन' भाण, श्री जिन ।। ४ ।।
इण पर जिनवर सम्भारिये,
दुःख - दारिद्र - विघ्न निवारिये ।
पच्चीस पैंसठ परमाण, श्रीजिन ।। ५ ।।
इण भणतां दुःख न आवे कदा,
जो निज पासे राखो सदा ।
धरिये पंच तणु मन ध्यान, श्री जिन ...।। ६ ।।
श्री जिनवर नामे संकट टले,
मन वांछित सहु आशा फले ।
'धर्मसिंह' मुनि नाम निधान, श्री जिन...।। ७ ।।

उवसग्गहरं स्तोत्र

उवसग्गहरं पासं, पासं, वंदामि कम्मघणमुक्कं ।
विसहर - विसनिन्नासं मंगल-कल्लाण-आवासं ।। १ ।।

विसहर, फुल्लिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ ।
तस्स गह-रोग-मारी, दुट्ठ-जरा जंति उवसामं।। २ ।।

चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होई ।
नर-तिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्ख-दोहग्गं ।। ३ ।।

तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणि-कप्पपायबब्भहिए ।
पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ।। ४ ।।

इअ संथुओ महायस! भत्तिब्भर-निब्भरेण हियएण ता देव ।
दिज्ज बोहिं, भवे-भवे पास जिणचंद ।। ५ ।।

श्री वज्र पंज्जर स्तोत्र

ॐ परमेष्ठि नमस्कारं, सारं नव-पदात्मकम्
आत्म रक्षाकरं वज्र पंजराभं स्मराम्यहम् ।। १ ।।
ॐ नमो अरिहंताणं, शिरस्कं शिरसि स्थितम् ।
ॐ नमो सव्व सिद्धाणं, मुखे मुख पटंवरम् ।। २ ।।
ॐ नमो आयरियाणं, अंग रक्षाऽति शायिनी ।
ॐ नमो उवज्झायाणं, आयुधं हस्तयोऽर्द्धम् ।। ३ ।।
ॐ नमो लोएसव्वसाहूणं, मोचके पादयोः शुभे ।
एसो पंच नमुक्कारो , शिला वज्रमयी तले ।। ४ ।।
सव्व पावप्पणासणो, वप्रो वज्रमयो बहिः ।
मंगलाणं च सव्वेसिं, खादिरांगार खातिका ।। ५ ।।
स्वाहंतं च पदं ज्ञेयं, पढ़मं हवई मंगलम् ।
वप्रोपरि वज्रमयं, पिधानं देह रक्षणे ।। ६ ।।
महाप्रभावा रक्षेयं, क्षुद्रोपद्रव नाशिनी ।
परमेष्ठि पदोदभूता, कथिता पूर्व सुरिभिः ।। ७ ।।
यश्चैवं कुरुते रक्षां परमेष्ठि पदैः सदा ।
तस्य न स्याद् भयं व्याधिराधिश्चापि कदाचन ।। ८ ।।

श्री तिजयपहुत स्तोत्र

तिजय पहुत्त-पयासय, अट्ठमहापडिहेर जुत्ताणं ।
समय खित्त ठियाणं, सरेमिचक्कं जिणंदाणं ।। १ ।।

पणवीसाय असीया, पनरस पन्नास-जिणवर-समूहो ।
नासेउ सयल दुरियं, भविआणं भत्तिजुत्ताणं ।। २ ।।

वीसा पणयालाविय, तीसा पन्नत्तरि जिणवरिंदा ।
गह भूअ रक्ख-साइणि, घोरूवसग्गं पणासंतु ।। ३ ।।

सत्तरि पणतीसाविय, सट्ठी पंचेव जिणगणो एसो ।
वाहि-जल-जलण-हरिकरि-चोरारि महाभयं हरउ ।। ४ ।।

पणपन्ना य दसेव य, पन्नट्ठी तह य चेव चालीसा ।
रक्खंतु मे सरीरं, देवासुर पणमिआ सिद्धा ।। ५ ।।

ॐ 'हरहुँहः सरसुंसः', 'हरहुंह':, तहचेव 'सरसुं सः' ।
आलिहिअ नाम गब्भं, चक्कं किर सव्वओ भद्दं ।। ६ ।।

ॐ रोहिणी, पन्नत्ती, वज्जसिंखला, तह य वज्ज-अंकुसिया ।
चक्केसरिनरदत्ता, काली - महाकाली - तह गोरी ।। ७ ।।

गंधारी, महजाला, माणवि - वहरूट्ठ - तहय - अच्छुत्ता ।
माणसि - महामाणसिया, विज्जादेविओ रक्खंतु ।। ८ ।।
पंचदस कम्मभूमिसु, उप्पन्नंसत्तरिं जिणाणसयं ।
विविह रयणाइवन्नो - वसोहियं हरउ दुरिआंइ ।। ९ ।।
चउतीस-अइसय जुआ, अट्ठमहापडिहेर-कयसोहा ।
तित्थयरा गय मोहा, झाएअव्वा पयत्तेणं ।। १० ।।
ॐ वरकणय-संख विद्दुम, मरगय-घणसन्निहं विगयमोहं ।
सत्तरि संय जिणाणं, सव्वामर-पूइअं वंदे स्वाहा ।। ११ ।।
ॐ भवणवई-वाणवंतर, जोइसवासी-विमाणवासी य ।
जे केवि दुट्ठ देवा ते, सव्वे उव समंतु मम स्वाहा ।। १२ ।।
चंदण - कप्पूरेणं फलए, लिहिऊण खालिअं पीअं ।
एगंतराई-गहभूअ-साईणि-मुग्गं पणासेई ।। १३ ।।
इअ सत्तरिसयं जंतं, सम्मं मंतं दुवारि पडिलिहियं ।
दुरियारि विजयवंतं, निब्भंतं निच्चमच्चेह ।। १४ ।।

/kumudwani

श्री पार्श्वनाथ स्तुति

प्रणमामि सदा प्रभु-पार्श्वजिनं,
जिननायक दायक सौख्यघनम् ।
घनचारू मनोहर देहंधर,
धरणिपति नित्य सुसेवकरम् ।
करुणारस - रंजित भव्यफणि,
फणि सप्त सुशोभित मौलिमणि ।
मणिकांचनरूप त्रिघोट घटम्,
घटितासुर किन्नर-पार्श्व-तटम् ।
तटिनीपति-घोष-गंभीर-स्वरं,
शरणागत-विश्व-अशेष-नरम् ।
नरनारी -नमस्कृत-नित्यमुदा,
पद्मावती गावती गीत सदा ।
सततेन्द्रिय-गोप यथा कमठं,
कमठासुरवारण - मुक्तहठम् ।

हठहेलित - कर्म कृतान्त - बलं,
बल-धाम - दलदल-पकजलम् ।
जलजद्वयपत्र प्रभानयनं
नयनंदित - भव्य तरीशमनम् ।
मन्मथ - महीरूह वहिसमं,
समतागुणरत्नमयं परमम् ।
परमार्थ विचार सदा कुशलं,
कुशलं कुरु मे जिननाथ अलम् ।
अलिनी नलिनी-नल-नीलतनुं
तनुता प्रभु पार्श्व-जिनं सुधनम् ।
सुधन-धान्यकरं करूणापरं
परमसिद्धि करं दददादरम् ।
वरतरू अश्वसेनकुलोदभवं
भवभृतां प्रभु पार्श्वजिनं शिवम् ।

/kumudwani

शुभ समय (गुलिक काल)

रवि - दोप. 3.00 बजे से 4.30 बजे तक
सोम - दोप. 1.30 बजे से 3.00 बजे तक
मंगल - दोप. 12.00 बजे से 1.30 बजे तक
बुध - प्रातः 10.30 बजे से 12.30 बजे तक
गुरू - प्रातः 9.00 बजे से 10.30 बजे तक
शुक्र - प्रातः 7.30 बजे से 9.00 बजे तक
शनि - प्रातः 6.00 बजे से 7.30 बजे तक

अशुभ समय (राहू काल)

रवि - शाम 4.30 बजे से 6.00 बजे तक
सोम - प्रातः 7.30 बजे से 9.00 बजे तक
मंगल - दोप. 3.00 बजे से 4.30 बजे तक
बुध - दोप. 12.00 बजे से 1.30 बजे तक
गुरू - दोप. 1.30 बजे से 3.00 बजे तक
शुक्र - प्रातः 10.30 बजे से 12.00 बजे तक
शनि - प्रातः 9.00 बजे से 10.30 बजे तक

दिन के चोघडिया (सूर्योदय से सूर्यास्त तक)

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल

प्रतिकाल 1.30 घंटा

दिन के चोघडिया (सूर्योदय से सूर्यास्त तक)

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

श्री शांतिनाथजी का छन्द

शांतिनाथजी को कीजे जाप, क्रोड़ भवांरा काटे पाप ।
शांतिनाथजी मोटा देव, सुर-नर सारे जां की सेव ।। १ ।।
दुःख/दारिद्र जावे दूर, सुख / सम्पत्ति होवे भरपूर ।
ठग/फासीगर जावे भाग, बलती होवे शीतल आग ।। २ ।।
राज-लोक माँ कीर्ति घणी , शांति जिनेश्वर माथे घणी ।
जो ध्यावे प्रभुजी को ध्यान, राजा देव अधिको मान ।। ३ ।।
गड़ गुंबड़ पीड़ा मिट जाय, दोषी-दुश्मन लागे पाय ।
सगलो भाग्यो मन नो भर्म, पामी समकित काटो कर्म ।। ४ ।।
सुनो प्रभुजी मेरी अरदास, हूँ सेवक तुम पूरो आस ।
मुझ मन चिन्तित कारज करो, चिंता आदि विघ्न हरो ।। ५ ।।
मेटो म्हारा आल-जंजाल, प्रभु मुझने तू नयन निहाल ।
आपनी कीर्ति ठामो-ठाम, सुधारो प्रभुजी म्हारो काम ।। ६ ।।
जोनित प्रति प्रभु ने रटे, मोतिया -काचबिन्द-फूला कटे ।
चेप-लावण दानों झड़ जाय, बिन औषध कट जावे छाल ।। ७ ।।
गरमी व्याधि मिटावे रोग, स्वजन-मित्र नो मिले संजोग ।
ऐसा देव न दीखे और, नहीं चले दुश्मन को जोर ।। ८ ।।

प्रभु नाम से आँख निर्मल थाय, धुंध-पटल-जाला कट जाये ।
कमलो-पीलो झर-झर-झरे, शांति जिनेश्वर साता करे ।।९।।
लुटेरा सब जावे नास, दुर्जन फीटा होवे दास ।
शांतिनाथ की कीर्ति घणी, कृपा करो तुम त्रिभुवनधणी ।।१०।।
अरज करूं घूँजोड़ी हाथ, आपसुं नहीं कोई छानी बात ।
देख रह्या छो पोते आप, काटो प्रभुजी म्हारा पाप ।।११।।
मुझ मन चिंतित करिये काज, राखो प्रभुजी म्हारी लाज ।
तुम सम जग माहीं नहीं कोय, तुम सुमरिया से साता होय ।।१२।।
तुम पास चले नहीं मृगी रोग, ताव-तिजारो नाखो तोड़ ।
मृगी मिटाई कीधी प्रभु सन्त, तुम गुण नो नहीं आवे अन्त ।।१३।।
तुमने सुमरे साधु-सती, तुमने सुमरे जोगी-जती ।
काटो संकट राखे मान, अविचल पदवी आपो स्थान ।।१४।।
सम्वत् अठारे चोराणू जाण, देश मालवो अधिक वखाण ।
शहर जावरे चातुर्मास, हूँ प्रभु तुम चरणारो दास ।।१५।।
ऋषि रघुनाथजी कीधो छन्द, काटो प्रभुजी म्हारा फन्द ।
मै जोऊँ प्रभुजी की वाट, मुझ मन की चिंता सभी काट ।।१६।।

''ॐ ह्रीँ श्रीं क्लीं देवी पंचांगुली तणी
आज्ञा कुरे ठः ठः ठः स्वाहा ।।,,

/kumudwani

पूज्य हुक्मीचंदजी म.सा. का छंद

पूज्य शहर 'टोडा' के थे वासी, संवत् अठारह सौ गुण्यासी ।
संयम ले जीवन सफल करें, पूज्य हुक्मीचंदजी का ध्यान धरे ।१।

पूज्य महात्यागी ने वैरागी, जांकी शिवपुर से सूरत लागी ।
आतम-ज्ञान में रमण करे, पूज्य हुक्मीचंदजी का ध्यान धरे ।२।

पूज्य सब मीठा ने त्याग दिया, इक्कीस वर्ष तप बेला किया ।
देवता जांकी सेवा करे, पूज्य हुक्मीचंदजी का ध्यान धरे ।३।

पूज्य नामे शत्रु मित्र बने, और राज पंच में श्रेष्ठ चुने ।
ऋद्धि-सिद्धि भण्डार भरे, पूज्य हुक्मीचंदजी का ध्यान धरे ।४।

पूज्य हुक्मीचंदजी ने जो ध्यावे, नित्य-नई बधाई घर आवे ।
भूत-प्रेत भय दूर रहे, पूज्य हुक्मीचंदजी का ध्यान धरे ।५।

पूज्य हुक्मीचंदजी का नाम रटे, तो ताव-तेजारी-पारी हटे ।
पूज्य नाम से कुष्ट टरे, पूज्य हुक्मीचंदजी का ध्यान धरे ।६।

पूज्य हुक्मीचंदजी का गुण गावे, वह सुख-सम्पत्ति आनंद पावे ।
चेला-चेली-पुत्र होय सरे, पूज्य हुक्मीचंदजी का ध्यान धरे ।७।

पूज्य नाम लिया से आशा फले, जय-विजय-लक्ष्मी आन मिले ।
पूज्य भवसागर से तारे-तिरे, पूज्य हुक्मीचंदजी का ध्यान धरे ।८।

पूज्य 'आउष्टक' विमान में जावे, बलदेव विदेह हो शिव पावे ।
कहे 'चौथमल' जयकार करे, पूज्य हुक्मीचंदजी का ध्यान धरे ।९।

घंटाकर्ण मंत्र

ॐ घंटाकर्णो महावीरः सर्वव्याधि-विनाशकः ।
विस्फोटकंभयं प्राप्ते, रक्ष-रक्ष महाबलः ।१।

यत्र त्वं तिष्ठसे देव ! लिखितोऽक्षर - पंक्तिभिः ।
रोगास्तत्र प्रणश्यन्ति, वातपित्तकफोदभवाः ।२।

तत्र राजभयं नास्ति, यान्ति कर्णे जपात्क्षयम् ।
शाकिनी-भूतवेताला, राक्षसाः प्रभवन्ति नो ।३।

नाकाले मरणं तस्य, न च सर्पेण दृश्यते ।
अग्निचौरभयं नास्ति, नास्ति तस्य अरिभयं ।४।

ॐ ह्रीं श्रीं घंटाकर्ण नमोस्तु ते !
ॐ नरवीर ! ठः ठः ठः स्वाहा !

/kumudwani

भक्तांबर के श्लोक

9

मन्ये वरं हरि -हरादय एव दृष्टा,
दृष्टेषु येशु हृदयं त्वयि तोष-मेति ।
किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः,
कश्चिन्-मनोहरति नाथ ! भवान्तरेपि ।। २१ ।।

10

तुभ्यं नमः स्त्रिभुवनार्ति - हराय नाथ ।
तुभ्यं नमः क्षिति - तला मल - भूषणाय ।
तुभ्यं नमस्त्रि - जगतः परमेश्वराय,
तुभ्यं नमो जिन ! भवोदधि शोषणायः ।। २६

11

उद्भूत-भीषण-जलोदर-भार-भुग्ना ,
शोच्यां दशा मुपगताश्च्युत जीविताशाः
त्वत्पाद-पंकज-रजोमृतऽदिग्ध-देहा
मर्त्या भवन्ति मकर-ध्वज-तुल्य-रुपाः ।। ४५ ।।

/kumudwani

मंगल गाथाएँ

12

''चइत्ता भारहंवासं, चक्कवट्ठी महिड्ढिओ ।
संती संतिकरे लोए पत्तागइमणुत्तरं ।।''

13

''एगे जिए जिया पंच, पंच जिए जिया दस,
दसहा उ जिणित्ताणं, सव्व सत्तू जिणामहं ।।''

मंगल मंत्र

14 ॐ ह्रीँ श्रीं अजितनाथाय नमः

ॐ ह्रीँ श्रीं चन्द्रप्रभवे नमः 15

16 ॐ ह्रीँ श्रीं वासुपूज्य स्वामी नमः

ॐ ह्रीँ श्रीं मुनिसुव्रत स्वामी नमः 17

18 ॐ ह्रीँ श्रीं अरिष्टनेमि नाथाय नमः

ॐ ह्रीँ श्रीं पार्श्वनाथाय नमः 19

20 ''नमोत्थुणं समणस्स भगवओ महावीरस्स''

ॐ ह्रीँ ऐं सरस्वत्यै नमः 21

22 पूज्यनीय गुरुदेव मुनींद जैन दिवाकर करो आनंद

नियमः अनुष्ठान में काले वस्त्र, चमडे की वस्तु का सर्वथा निषेध है ।
महिलाएं शुध्दता का पूर्ण ध्यान रखें । प्रति गुरूवार कार्ड साथ में लावें ।

RJ Graphics : 7715925099